ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग

जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र

डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-२६

दिनांक- मंगलवार, १८ अप्रैल, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 40.2 एवं 20.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 66 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 16 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.2 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 6.4 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 8.5 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 26.7 एवं दोपहर में 39.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(19 से 23 अप्रैल, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 19 से 23 अप्रैल, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ रह सकता है। हलाकि मौसम के शुष्क बने रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान तथा न्यूनतम तापमान में वृद्धि हो सकती है, जिसके कारण अधिकतम तापमान 40–42 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। अगले २ दिनों तक प्रचंड लू की स्थिति बने रहने की सम्भावना है जबकि न्यूनतम तापमान 23–26 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 40 से 45 प्रतिशत तथा दोपहर में 15 से 25 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 14 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है।

• समसामयिक सुझाव

- मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए तैयार गेहूँ, अरहर एवं मक्का फसल की कटनी तथा दौनी करें। गेहूँ एवं मक्का के दानों को अच्छी तरह धूप में सूखाने के बाद भंडारण करें।
- बसंतकालीन मक्का की फसल जो घुटने की ऊचाई के बराबर हो गयी हो, मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। आवश्यक नमी हेतु सिंचाई करें। इन फसलों में तना छेदक कीट की निगराणी करें। शुष्क एवं गर्म मौसम इस कीट के फैलाव के लिए अनुकूल वातावरण है। अण्डे से निकलने के बाद इस कीट की छोटी–छोटी सुंडियॉं मक्का की कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहूँच जाती है तथा गुद्दा को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ते हुए सुरंग बनाती है। फलस्वरुप मध्य कलिका मुरझाई हुई नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। इस प्रकार पौधे की बढ़वार रुक जाती है एवं उपज में काफी कमी आती है। इस कीट के रोक–थाम हेतु क्लोरपाईरिफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ मि०ली०/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल में समान रुप से छिडकाव करें।
- हरे चने (मूंग) और काले चने (उड़द) की बुवाई जल्द से जल्द पूरी करें। विगत माह में बोयी गई मूंग व उरद् की फसलों में निकाई–गुराई एवं बछनी करें। इन फसलों में सघन रोमोवाली सुंडिया की निगरानी करें। इनके सुंडियो के शरीर के उपर काफी घने बाल पाये जाते है। यह मूंग एवं उरद् के पौधों के कोमल भागों विशेषकर पत्तियों को खाती है। इनकी संख्या अधिक रहने पर कभी–कभी केवल डण्ठल ही शेष रह जाती है। इस प्रकार इस कीट से फसल को काफी नुकसान एवं उपज में काफी कमी आती है। रोक–थाम हेतु फसल में मिथाइल पैराथियान 50 ई0सी0 दवा का 2 मि0ली0/लीटर या क्लोरपाईरिफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 मि0ली0/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल में छिडकाव करें।
- भिण्डी की फसल में लीफ हॉपर कीट की निगरानी करे। यह कीट दिखने में सुक्ष्म होता है। इसके नवजात एवं व्यस्क दोनो पत्तियों पर चिपककर रस चुसते है। पत्तियाँ पीली तथा पौधे कमजोर हो जाते है, जिससे फलन प्रभावित होती है। इसका प्रकोप दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- फलदार वृक्षों तथा वानिकी पौधों को लगाने के लिए अनुशंसित दूरी पर 1 मी0 व्यास के 1 मीटर गहरे गडढ़े बना कर छोड़ दें। लगाये गये पॉपलर वृक्षों के चारो ओर निकौनी तथा साफ–सफाई करें।
- आम के पेड़ में मिलीबग (दहिया कीट) की निगरानी करें। यह कीट चिपटे गोल आकार के पंखहीन तथा शरीर पर सफेद दही के रंग का पॉउडर चिपका रहता है। यह आम के पेड़ में मुलायम डालों और मंजर वाले भाग में बहुतो की संख्या में चिपका हुआ देखा जा सकता है तथा यह उन हिस्सों से लागातार रस चुसता रहता है जिससे अक्रान्त भाग सुख जाता है तथा मंजर झड़ जाते हैं। इस कीट से रोकथाम हेतु डाइमेथोएट 30 ई0सी0दवा का 1.0 मि0ली0/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर पेड़ पर समान रुप से छिडकाव करें। आम के बगीचों में नमी बनाये रखें।
- लीची के पेड़ में फल बेधक कीट के शिशु जो उजले रंग के होते हैं। यह फलों के डंठल के पास से फलो में प्रवेष कर गुदे को खाते हैं जिससे प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता। इस कीट से वचाव हेतु लीची के पत्तियों एवं टहनियों पर प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 का 10 मि0ली0 या कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनषील पॉवडर का 20 ग्राम दवा को 10 लीटर पानी में घोलकर अप्रैल माह में 15 दिनों के अन्तराल पर प्रति पेड़ की दर से दो छिड़काव करें। किसान भाई लीची के बगीचों में नमी बनाये रखें।
- टमाटर की फसल को फल छेदक कीट से बचाव हेतु खेतों में पक्षी बसेरा लगायें। कीट से ग्रसित फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 इ0सी0/1 मि0ली0 प्रति 4 ली0 पानी की दर से छिड़काव करे।
- गरमा सब्जियों जैसे भिन्डी, नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की फसल में आवश्यकतानुसार निकाई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें। सब्जियों में कीट एवं रोग–व्याधि की निगरानी प्राथमिकता से करते रहें। कीट का प्रकोप इन फसलों में दिखने पर मैलाथियान 50 ई0सी0 या डाइमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- दूधारु पशुओं को दिन में छायादार सुरक्षित स्थानो पर रखे तथा अधिक मात्रा में स्वच्छ पानी पिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 40.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 5.0 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 20.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.8 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)